# ॥ प्रस्तावना ॥

प्रगट हो कि यह स्तवन तरंगिणी ग्रंथ का द्वितिय तरंग सत्तपशमदमसंय्यमाघलङ्कृत श्रीमज्जैनाचार्य्य पूज्यवर धर्म्मदास जी महाराज के सम्प्रदायानुयायी विद्वद्वर्य्य पूज्यवर श्री १००८ श्री मगनमुनि जी महाराज तच्छिष्य श्रीमज्जैन धर्म्मोपदेष्टा माधव मुनि जी ने भजनानन्दी सज्जनों के ज्ञान लाभार्थ अति परिश्रम से रचा है इसके छापने मे यदि प्रामादिक अशुद्धियां रही होयं तिन्हें सुज्ञ जन शुद्ध कर बांचेगे यह हमारी विनय पूर्वक प्रार्थना है किमधिकम् ।

इस पुस्तक को अविनय खुले मुख तथा दीपक की सहायता से न बांचना चाहिये ॥

निवेदक—बलवन्तराय—प्रधान

जैन सभा आगरा

# ॥ विज्ञापन ॥

सभा में निम्न पुस्तक बिक्रीयार्थ उपास्थित हैं ।

| | |
|---|---|
| स्तवनतरङ्गिणी पहिला भाग | —) |
| स्तवनतरंगिणी द्वितीय भाग | =) |
| श्रीप्रदेशी चरित्र | —) |
| दशवैकालिक पाठ | ।) |
| सामायक सूत्र | )॥ |
| सायायक प्रतिक्रमण सूत्र | =) |
| वारहभावना सँग्रह | )॥। |
| गुल्दिस्ताजैन भजनमाला उर्दू | —)॥ |
| नेकवदकी तमीज जैन प्रकाश | —) |
| जैन धर्म के नियम | )॥ |

पता पुस्तकाध्यक्ष साधुमार्गी जैन
उद्योतनी सभा मानपाड़ा आगरा.
पता सेठ जसवन्तराय
आगरा

॥ श्रीमद्वीरायनमः

॥ अथ लावनी रंगत लँगडी ॥

सकल इष्ट मांहिं विशिष्ट उत्कृष्ट पंच परमेष्टि बिचार ॥ याकी महिमां अगम सुरगुरु मुनि कहत न पावें पार ॥ टेर ॥ गुण अनंत परमेष्टि प्रभू के पै शीत अष्टो त्तर परधान । सुमरण तिनका करो सब जीवहिरिदेमें धर के ध्यान॥ तरु अशोक सुर सुमनवृष्टि दिव्यध्वनि चारु चमर जुग जानें ॥ फटिक रतन को लसे सिंहासनें भामंडल ज्यूं भानें ॥ तीन छत्र पर छत्र देवें दुंदुभी येवसु प्रति हार्य्य बखान ॥ अपाय

अयगम्य ज्ञान वचे पूजा ये अतिशय चतु
मान ॥ द्वादश गुण ये बडे देव अरिहंत
प्रभूके भवि उरधार ॥ याकी० ॥१॥ ऋद्ध
सिद्ध नव निद्ध प्रगट होय पलक मांहिश्री
सिद्ध जपंत ॥ वसुगुण जिनके सुमरिये
प्रात उठ भवि बेठ इकंत ॥ ज्ञान अनंते
अनंतही दर्शन है सुख अव्याबाधि अनंतो॥
रागद्वेष से भिन्न ताते प्रभु खायक समकित
वंतं ॥ अचल अमूर्त्तिक अगुरुलघू गुण
कर राजे श्री सिद्ध महंत ॥ शक्ति अनंती
अनंते ज्ञान बान कोउ लखे सुसंत ॥ ये
वसु गुणकर युक्त मुक्त भगवंत नमो नित
वारंवार ॥ याकी० ॥२॥ पंचेन्द्रीवश करें ब्रह्म
व्रत धरें बाडनवसे मुं विसाल ॥ मूं कं

चारों कषायन को[१८] रहें उपशम रसमें लाल॥ पालें पंच महाव्रत निर्मल[२३]। पंचा चारनके प्रतिपालें ॥ पंच समित को सदा उपयोग सहित पालें उजमाल[३३] ॥ मन वच तन को गोपं निश दिन[३६] निज आतम हित दीन दयाल ॥ ये छत्तीसों सुगुण युत आचारज भजिये तिरकाल ॥ धरे ध्यान जो भव्य भावधर सो पावे सुख सँपति सार॥याकी०॥ ॥३॥ जस समीप अध्येन करें जिन आगम को मुनि हित चितलाय ॥ पाठक ऋषि सो कहीं जें तस पग वंदत पाप पलाय ॥ ग्यारह अंग उपंग दुवादश आप पढ़ें अरु देत पढ़ाय[२४] ॥ चरण सित्तरी करण सित्तरी को इमहिज दें समुझाय[२५] ॥ ये पच्चीस गुणों

करें राजें सो मुनिवर कहियें उवझाय ॥
सुमरण तिनका करै तिहूंकाल तास त्रिभु
वन वशथाय ॥ है अद्भुत अतिशय कारी
सुमरण पेको जाने नरनार ॥याकी०॥४॥
पंच महाव्रत निर्मल पालें शुद्ध भावना
सहित समन्न ॥ पंचेन्द्रिय को करें वशचार
कषाय तजें[14] मुनिजन्न ॥ भाव करण अरु
योग सत्य[17] पुन सहें शीत आदिक वेदन्न[18]॥
मन बच तन को धरें संमे[21] दंसण णान
चरित संपन्न[24] ॥ क्षमावंत[25] वैराग्यवंत[26] उपसर्ग
सहें मरणांतें[27] कठन्न ॥ सात वीश ये मूल
गुण धारी साधु कहें भगवन्न॥साधें स्वपर
कारज को ताते मुनि मनवंछित दातार॥

याकी० ॥ ५ ॥ सार चतुर्दश पूरव को यह भाख्यो आगम मांहि मुनीश ॥ अस सुमरण से भयो पल मांहि उरग अवनी को ईश ॥ आठ कोड वसु लाख आठ हजार आठसे आठ जपीस ॥ तीर्थंकर सो थाय इम ग्रन्थ मांहि गायो योगीश ॥ इमजानी उत्तम भव प्राणी जपो भक्ति भावें निशदीस ॥ सत्तप शमकै धरण हारे सूरीश्वर मगन ऋषीश ॥ महामंत्र नवकार कहै मुनि माधव जपतां जय जय कार ॥याकी०॥६॥इति॥

## ॥ अथ कव्वाली ॥

॥ देऊं कोटि धन्य मैं ताहि जो बालापन संजम धारे ॥ जो बालापन संजम धारे जो निज आतम कारज सारे ॥देऊं०॥टेर॥

सुर धनु सम जानी संसार ॥ त्यागे अहि कंचुकि अनुहार ॥ चढते भावें संजमभार। लेने की मन मांहिं विचारे ॥ दे० ॥ १ ॥ त्यागी जगका माया मोह॥लेवे चारित धरैन छोह ॥ राखै जरा न गुरु से द्रोह । जैसो लेतै सोही पारे ॥ दे० ॥२॥ गुरु की सेवा करे हमेश ॥ विचरै देश प्रदेश विपेश ॥ देवे सत्य धर्म उपदेश आपन तिरे अवर को तारे ॥ दे० ॥ ३ ॥ राखै प्रति दिन बढते भाव ॥ पढने गुनने का चितचाव॥ ऐसा लहिमानव भवदाव विषियन सुख मांटे नहीं हारे ॥दे०॥४॥स्वपर समय तनों होय जान तपस्या करै शक्ति परिमाण ॥ पाले सुगुरु मगन मुनि आण माधव दोऊ

कुल उजवारे ॥ देऊं० ॥ ५ ॥ इति ॥

## ॥ अथ गजल रेखता में ॥

बड़ा ये हे मुझे विष्मय रूप कैसा तिहारा है ॥ देवदेखे विविध विधिके न तेरा गुण निहारा है ॥ टेर॥ कोइ तो पशु मुखी देवा लखे में प्रगट जग मांहीं॥गजानन्नू षड़ानन सरिसे अजव जिन्नु देह धारा है॥ ब० ॥१॥ पशू रूपी कोई देवा कच्छ ओ मच्छ बारा ही ॥ कोई तो जल अनल पूजें देव पीपल नियाराहै ॥ब०॥२॥ देव कोई पशू बाही चढे जो वृषभ आदिक पै ॥ नशे के लालची कोई जिन्हों को मद पियारा है ॥ ब०॥३॥ कोई क्रोधी लखे देवा धरें जो शस्त्र निज करमें॥ गदा कुंता धनुष बरछी किसी के कर कुठारा

है ॥ब०॥४॥ विषय के बश परे केई जिन्हों के सँग अर्द्धंगी ॥ कोई कामी रसिक नामी ने चेले संग दारा है ॥ब० ॥ ५ ॥ कोई तो चार भुजधारी कोई कें चार आनन हैं। देव कोई सहिंस शिरका धरेसो धरणि भारा है ॥ब०॥६॥ सरागी सगुण युत येतो चरित्त से है प्रगट जाहिर ॥ सुन्यो तू तो सुगुरुमुख से निरागी निर्विकारा है ॥ब०॥ ७॥ सुगुरु श्री मगन चरणन को दास माधव कहे जपी ये ॥ देव देवाधि देवों का निरजन्नू निराकारा है ॥ ब० ॥ ८ ॥ इति ॥

## अथ स्यान सुमति संवाद पद

राग रसिया की में ।

अजव गजव की बात कुगुरु मिल कैसो

वेश बनायोरी।टेर।पानो पेत शेत पट ओढन जिन मुनिको फरमायोरी।अ०।१।कल्पसूत्र उत्तराध्ययन में प्रगट पणें दरसायोरी।अ०।।२। तो क्यों पीतवसन के सरिया कुगुरुनके मन भायोरी ॥ अ० ॥ ३ ॥ भिष्ट भये निर्मल चारित से तासे पीत सुहायोरी ॥अ० ॥४॥ नहीं वीर शाशन वरती हम यों इन प्रगट जतायोरी ॥ अ० ॥ ५ ॥ तोभी मूढ़मती नहीं समझे ताको कहा उपयोरी ॥अ० ॥ ६ ॥ रजो हरण को दंड अभेहित मुनिपट मांहिं छुकायोरी ॥अ० ॥७॥ तो क्यों आकरणांत दंड अति दीरघ करमें साह्योरी॥अ०॥८॥त्रिविध दँड आतम दंडानों ताते दंड रखायोरी ॥ ॥ अ० ॥९॥ मुंह पँतग मुख पै धारे विन

अवश प्राणि वध थायोरी ॥अ०॥१०॥ तो
क्यों करमें करपति धारी हिंसा धरम चला
योरी ॥अ०॥११॥ विपत काल में वेश बदल
इन मांग मांग कर खायोरी ॥ अ०॥ १२ ॥
पडी कुरीत कहो किम छूटे पक्ष पात प्रगटा
योरी ॥ अ० ॥१३॥ क्या अचरज की बात
अलो ये काल महातम छायोरी ॥अ०॥१४॥
स्यान सुमति संबाद सुगुरु सुनि मगन
पसायें गायोरी ॥ अ० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

॥ देखो पँचम काल कलू की महिमा
अजव निराली है ॥ टेर ॥ जो जो वातहोंय
या जुगमें वो कबहूँ न निहाली है ॥दे०॥१॥
तीन खंड को नायक ताको रूप बनावें जा

ली है ॥ दे० ॥ २ ॥ पामर नीच अधम जन
आगैं नाचैं दे दे ताली है ॥ दे० ॥३॥ पदमा
पतिको रूपधारकैं मांगैं फेरै थालीहै।दे०।४।
बनें मात पितु जिनजी के ये बात अचँभे
वाली है ॥दे०॥५॥जम्बू रूप बना के नाचें
कैसी पडी प्रनाली है ॥दे० ॥६॥ पुत्र पिता
को करें अनादर प्रीत सुसुर संग पाली है॥
॥दे०॥७॥ खारी लागें बहिन भानजी प्यारी
लागैं साली है ॥ दे० ॥ ८ ॥ माता सों कहैं
काम काजकर मेरी बहू अरवाली है।दे०।९॥
दुलहा साठ बरषका दुलहिन पांच बरष की
लालीहै ॥दे०॥१०॥ जान बूझ निज कन्या
को दें अंध कूपमें डालीहै।दे०।११।नारीधरम
करणमें लाजेंचरितरचे चरितालीहै।दे०।१२।

मात पितादि भरे पंचन में गावें गहरी गाली है ॥ दे०॥१३॥धरम कथा सुनने की को कहे तो कहें का हम ठलीहै ॥दे० ॥१४॥ आला ढोला सुनें हरषसूँ नारिभई नखरालीहै।दे०। ॥ १५ ॥ जाचक आयें कहें परें जा नहीं हाथ हम खालीहै ॥दे०॥१६॥ करें कुसोंनआपनों अपुही मूढ प्रथा ये चाली है ॥दे० ।१७।चरम कारकें गाय बँधे घर बामन के घर छाली है ॥ ॥ दे० ॥ १८ ॥ प्रगट अविद्या देवी जी ने फूट घरों घर घाली है ॥दे०॥१९॥ करो किनारो बुध या जुगतें धरम धरण ल्यो झाली है।दे०। ॥२०॥ माधव अन होंनी नहीं होवे भावी टले न टाली है ॥ दे० ॥ २१ ॥ इति ॥

—:-*❋*-:—

## ॥ अथ कव्वाली ॥

प्रतेप भाण समांन हमांन जो जगमें निज धर्म दिपावै ॥ जो जगमें जिनधर्म दिपावै वो जगमें जगनाथ कहावै ॥ टेर ॥ जिन भाषित आगम अनुसार॥ जिनवर धर्म करे परचार ॥ धारे शिर जिन आणाभार सोही जन जैनी कहलावै ॥ प्र० ॥ १ ॥ पर भावना अंग अव धार ॥ तन मन धन व्यय करै अपार ॥ आगम ग्रंथतनों भंडार करके बिद्यालय खुलवावे ॥प्र०॥२॥ उपदेशक जन कर तय्यार॥ भेजे देश विदेश मझार॥ जहँ पै नहीं साधु पयसार तँह पै दया धरम दरशावे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ दिक्षा लेवेंजोनरनारताकोदेवेविविधसहार॥परभवकी लेखरचीलारताकीदृढदिशकीरतिछावै॥प्र०॥

॥४॥राखन दया धरमकी कार ॥ त्यागे निज कुटुम्ब परवार ॥ ताको धन मानव अवतार जो मिथ्यामत दूर हटावै ॥प्र०॥५ ॥ श्रीयुत सुगुरु मगन अनगार । वँदो भवि नितवार हजार ॥ धरम दिपावन को इकरार करल्यो माधव छन्द सुनावै ॥ प्र० ॥ ६ ॥ इति ॥

## ॥ अथ कव्वाली ॥

॥ सुनियें विनय कहूं हे दीन भो खट काया के पीहरजी । भो खट कायाके पीहर जी सत्तप शमदमके सायरजी ॥ टेर॥ राख न दया धर्म्म की टेक ॥ सब जुर मिल हो जावो एक ॥ तज के आपस का व्यतिरेक निंदा कलह मान मद वरजी ॥ सु० ॥ १ ॥ स्व स्व संप्रदाय का गर्व ॥ तजके निर्णय

कीजे सर्व ॥ मोटो श्रीपर्यूषण पर्व जापै है समकित निर्भरजी ॥ सु० ॥ २ ॥ तजिये बिरथा खेंचातान ॥ जासे होय दिनों दिन हांन॥उन्नति दयातनी सब थांन कीजे संप खडग कर धरजी ॥ सु०॥ ३ ॥ आपस में द्यो विद्या दान ॥ वच्छल ताई का धर ध्यान ॥ वोलो प्राकृत में बुधवान अन्यों अन्य मिलो जहं परजी ॥सु०॥४ ॥ हिंसा धरम तनों परचार॥प्रति दिन बढतो जाय अपार॥याको करो कछू प्रतिकार बिलकुल वनों मती खुदगरजी॥सु०॥५॥स्वपर समय तनों होय जांन ॥ सोही मुनि दे अवशव खान ॥ यामें नहीं मान अपमान आगे सब मुनिगण की मरजी ॥ सु० ॥ ६ ॥ श्री

गुरु मगन चरण सुपसाय ॥ पायो रत्न त्रय सुखदाय ॥ माधव हाथ जोड शिर नाय करता सब सँतन सों अरजी ।सु०।७।इति।

## ॥ अथ गजल रेखता में ॥

॥ अविद्या प्रेतनी तैंनें द्वंद कैसा मचाया है ॥ भुला के सुपथ से चैतन कुपथ मांहीं भ्रमाया है ॥टेक॥ सच्चिदानंद प्रभुतजकें। उपल पूजन चलाया है॥ गौरि गोवर गधा-घूरों पेड़ पानी पुजाया ॥अ० ॥१ ॥ पुत्र के काज वलि देना महिष मेंढा मुरग अजकी॥ पतीको छोड पर पति से पुत्र लाना बताया है॥ अ०॥२॥भोग भोगी वने जोगी दया की रीत जांने ना ॥ भंग गांजा चरस पीके

कहैं आनन्द आयाहै ॥अ०॥ ३ ॥ पुजायें कुगुरु ऐसेभी जिन्होंके धामधनदारा॥तिन्हों का मूढ लोगों को प्रगट झूँठा खबाया है॥ ॥अ०॥४॥पुत्रके पठन पाठन में खरच कौडी नहीं करना ॥ व्याह में वे अरथ धन को लुटाना तैं सिखाया है॥अ०॥५॥दयामें धर्म जग जानें मूढ से मूढ भी माने धरमके हेत हिंसा भी करो ये तैं सुनाया है ॥अ०॥६॥ धर्म जो होय हिंसा से फेर क्यों दया पाली जै॥ ध्यान देकें लखो वुध जन्न घोर अंधेर छाया है ॥ अ०॥ ७॥ सुगुरु श्री मगनमुनि ध्याई कहैं माधव अविद्याने॥धर्म का नाम लेलेके कर्म बंधन बढाया है॥अ०॥८॥इति॥

—***—

॥ अथ लावणी रंगत लँगडी ॥

॥सुख सुभाग संपति शिवदाई स्वर्ग शैल सोपान समान॥सत गुरु भाख्यो सदा शुध भाव सहित दीजै भविदान॥टेर॥दान दियें दारिद्र नशे जश कीरत दह दिशमें छावे॥ प्रीत बढ़ावे विविध विध बैभव बिन उद्यम पावै ॥ आधि व्याधि दुख दोहग दुःकृत दूरटलैं भय विरलावै॥सब जग जाने विपत में दान दियो आडो आवै ॥ दानी जनको नाम जगतमें लेवैं सब कोई होत विहान॥ ॥स०॥ १॥ दान प्रभाव निधान मिलै गुण ज्ञान मिलै अति आदरसे॥बिन श्रम कीयें रसायन मिलै मिलै मणि माणि धरसे॥काम धेनु चिंतामिणि चित्रा बेलि मिलै जल धर

बर से ॥ नृप पद पावै भोग सुख त्रेमतिरै भव सागरसे ॥ दान कृपाण धार कर दानी शूर हरें अघ अरि के प्राण ॥ स० ॥ २ ॥ पात्र दान दियें होय निर्जरा अथवा पुण्य बंध ह्वै जाय ॥ दुखित जनों के दियेसे पुद्ग लीक सुख भव भवथाय ॥ रिपु जन बैर तजैं दीये से सज्जन प्रीत करे चितलाय ॥ अनुचर भक्ती करै जश भाट बदै बश हो बैराय ॥ दान कोऊ निर्फलन होय पे सब से उत्तम अभय प्रधान ॥ स० ॥ ३ ॥ अभय दानकी महिंमा जिन आगम में वरणी अपरँपार ॥ गज भव मांहीं मेघनें देखो परत कियो संसार ॥ भयो मेघरथ षोडस मो जिन शांति नाथ सब जग सुखकार ॥ जस

सुमरण से आजहूं साता पामें सुमरणहारा। मेतारज मुनि अभय दान दे निर्भय पद पायो निर्वाण ॥स० ॥ ४ ॥ पेखो परतख दान सुपातर है सुख संपति को दातार॥ दे सुपात्र को दान सो भरे अगण्य पूण्य भँडार ॥ दान सुपात्र प्रभाव सुमनने पाई ऋद्धि अचिंत्य उदार ॥ सुरपति के सम्म भोग भोगे नर भव में शालि कुमार॥दान सुपात्रतनी महिमां को को कोविद करसके बयान ॥स०॥५॥ दूषण पंच पंचही भूषण दान तने भाखे भगवन्न॥दूषण तजके सजो भवि भूषण तिनका सुन बरनन्न॥विप्रिय वचन बिना आदर अरुकर बिलम्बै देबिल खबर्दैन्नू ॥ पोंमावैदे दानें ये दूषण पँचत

जो बुधजन्न ॥ दूषण सहित दान जो देवै दान नहीं सोतो दुख खान । स० ॥ ६ ॥ निर्बंद वस्तु चतुर्दश देवै निजकर सेती होय प्रसन्न ॥ वहु आदर से दान दे करै सकल दिनै अनुमोदन्न ॥ भूषण पंच प्रकार कहे ये सजो भव्य पाके नर तन्न ॥ दान धर्म के हेत सब करयो तन मन धन अरपन्न॥ माधव दान महातम बरण्यो सुगुरु मगन मुनि को धर ध्यान ॥ स० ॥७॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

॥ सुरपति सानिध करैं टरैं सब सँकट पावै स्वर्ग सलील ॥ शिव सुखदाई सुमति उर आन अखँडित पालो शील ॥टेर॥ सीतके जलसम होय अनल थल सम समुद्र होयसिंह

सियाल ॥ नाग छाग सम्म् होय विकराल व्याल पुष्पन की माल॥ अति उतँग गिर उपल खंड सम होय बिकट वन नगर बिशाल अमृत सरिसो विषम बिष होय नृपति सम नर कँगाल ॥ कामदेव सम होय कुरूपी कल्प बृक्ष सम होय करील ॥ शि० ॥१॥ पिशुन पडे पगतलैं छलैना ॥ भूत प्रेत व्यंतर बैताल॥दीठ मूठ ना लगे विन जतन कटैं कोटिन जंजाल ॥ सूली को सिंहासन था बे वंधन भय भाजै तत्काल ॥ बिन भेष जहीं व्याधि बिरलाय थाय जय समर बिचाल ॥ फलै मनोरथ माल हाल ही करैं हुकमकी सुर तामील ॥ शि० ॥२॥ अरि अरिष्ट होय नष्ट इष्ट सँजोग मिलै छलिया

न छलै ॥ आगम दरसै जगत मैं जगमग जश की ज्योति जलै ॥ प्रति दिन बढै प्रताप चोगुणो प्रबल पापकी ताप टलै ॥ दुरगति नाशै घोर उपसर्ग्ग शमैं वर वचन फलै॥पूरण तेज पराक्रम आयू पावे पावन थावेडील ॥ शि० ॥ ३ ॥ शीलवँत भगवँत बरोबर यामें नहीं संदेह लगार ॥ शुध मन पाले शील सो शीघ्र होय भव दधिसे पार॥बिन समकित परवश पाल्यो हू शील विरत सुरगति दातार ॥ सुगुरु मगन से सुन्यो इम सूत्र उवाई के मँझार ॥ माधव कहै मनष तन पाके पालो शील करो मति ढील ॥ शि० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

॥ प्रबल पापदल दलन वज्रवर विपत विघन घन शमन शमीर ॥ तपदव सरिसो दहन भव विपन मदनमारन बडबीर॥टेर॥ अनशनादि तप तपत त्रिदशपति त्रिविधि सेव तिरकाल करैं ॥ खेट भेट ले मिलैं कर जोड भवन पति पांय परैं ॥ काज करैं विंतर किंकर सम विनय सहित अस्तुत उच्चरैं ॥ खग पत्ति ना में शीस अवनीश चरण में माथ धरैं ॥ अति अनंद अहमिंद करें अभिवंदन कटैं करम जँजीर ॥ त० ॥ ॥ १॥ तप से सिद्ध होंय सब साधन मँत्र जँत्र और तंत्र जडी॥सफलित होवे द्रियो वर पदमा पांयन रहे पडी॥प्रगट होय घट

ज्ञान भान सम खुलें शास्त्र की कडी कडी॥ रिद्ध अचिंती होय उत्पन्न रहे सब बात बडी॥ जनम मरण भव व्याधि भयँकर भेटन तप औषधि अकसीर ॥ त० ॥ २ ॥ तप परिचय परतक्ष जगत में तप पसाय त्रिभुवन पतिथाय ॥ तप प्रभाव से पूज्य पद पायो हर केशी मुनिराय॥द्रढ प्रहार तस कर तप सेती सदगति पामी कर्म खिपाय॥ अर्जुन माली लही पंचम गति तपही के सुपसाय॥ करम काठ काटने कुठार, सम तप तापिये साहस धर धीर ॥ त० ॥ ३ ॥ नव कारसी आदि ले बरसी तपकी सरधा उर धारिये ॥ शक्ति प्रमाणें बनें सोही तप क्षमा सहित करिये॥नरतन चिंता मणि समपाके ममत भाव

भवि पर हरिये ॥ तप धारी की सेव तनमन से कर भव दधितरियै ॥ माधव कहै मगन मुनि पद कज परसत होय पवित्र शरीर॥ ॥ त० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥

॥दान शियल तप शम दम संयम नियम आंखडी विरत भजन्न ॥ बिना भावना वृथा सब जिम ऊषरमें मेघ पतन्न ॥ टेर ॥ नीरागी नर आगें निष्फल जिम कटाक्ष मृगनेंनी के ॥ बहिरे आगें वृथा जिम गीत मधुर पिकवेंनी के॥जनम अँध पति के आगें शृंगार विफल सुख लेनी के ॥ वृथासूमकीसँपदा सुपन विफलविनरेंनीके॥ दया बिना सब क्रिया अकारथ मनवश विन

जिम जोग वसन्न ॥ वि० ॥ १ ॥ भवना शनी भावना भ्रम भय हरणी जिनवर वरणी है ॥ भव अरणव में पोत सम स्वर्ग मोक्ष निस्सरणी है ॥ दाना दिक तिहुं धर्म कल्प तरु उपजन अनुपम धरणी है ॥ दिव शिव दाई करम वसु विध कतरण कर तरणी है॥ तिरे अनंत भव्य भावन से कतिपय का कहियै वरणन्न ॥ वि०॥२॥ परसन चँदराज ऋषि पलमें पायो निरमल केवल ज्ञान ॥ मामरुदेवी भावना भाय लह्यो निश्चल नि: र्वाण॥कपिल केवली भयो क्षणक में दादुर पाम्यों देव विमान॥ मुकुर भवन में भरत नृप पाम्यो पंचम ज्ञान निधान॥पायो पंचम सुरग मिरग एलानट भेटे जनम मरन्न ॥

॥वि०॥३॥जीरण सेठ सुरग द्वादश मैं पायो केवल भावन भाय ॥ अवर अनंते भव्य भवदधिसे तिरे भाव सुपसाय॥ विना भाव नहीं लाभ होय क्रय विक्रय में भी किये उपाय॥ इम जानी ने भावियुत दानादिक कीजै मन लाय॥माधवकहैसकल सुख दायक सुगुरु मगन मुनिकोदरशन्न॥वि०॥४॥इति॥

## ॥ लावणी बहर खडी ॥

मणी मुकरको जो न पिछाने वो कैसा जौंहरी प्रधान॥ जो शठ जड चेतन नहीं जाने ताको किमकहियै मतिमान॥टेर॥जडमें चेतन भाव विचारें चेतनमें जड भाव धरें॥ प्रगट यही मिथ्यात्व मूढ वो भीम भवोदधि केम तरें॥ मुक्तगये भगवंत तिन्हों का फिर अज्ञानन

मुख उच्चरें ॥ करें विसर्जन पुन प्रभुजी का यह अद्भुत अन्याय करें ॥ दोऊ बिध अपमान प्रभूका करें कहो कैसे अज्ञान ॥ जो० ॥ ॥ १ ॥ श्रुत इन्द्री जाके नहीं ताको नाद बजाय सुनावें गान ॥ चक्षु नहीं नाटक दिखलावें हाथ नचाय तोड कर तान ॥ जाके घ्राण न ताको मूरख पुष्प चढावें वे परमान ॥ रसना जाके मुख में नाहीं ताको क्यों चांढें पकवान ॥ फोकट भ्रम भक्ती में हिंसा करें वो कैसे हैं इन्सान ॥ जो० ॥ २ ॥ जव गोधूम चना आदिक सव धान्य सचित जिन राज भने ॥ प्रगट लिखा है पाठ सूत्र सामायिक मांहीं वियकमने ॥ दग्ध अन्न अंकुर नहीं देवै देखा है परतक्ष पणे ॥ तोभी शठ हठ

से बतलावे अचित कुहे तू लगा घणे ॥ अभि निवेश उन्मत्त अज्ञ को आवे नहीं शुद्ध श्रद्धान ॥ जो० ॥ ३ ॥ शुध श्रद्धान बिना सब जप तप क्रिया कलाप होय निस्सार ॥ बिन समकित चउदह पूरव के धारी जांय नरक मंझार॥ है समकित ही सार पाय नर भव कीजे सत असत विचार ॥ सुगुरु मगन सुपसाय पाय मति माधव कहै सुनों नरनार ॥ तजकें पक्ष लखो जड चेतन व्यर्थ करो मत खेंचातान ॥ जो० ॥ ४ ॥ इति ॥

## ॥ अथ लावनी अष्टपदी ॥

॥ब्रह्म ब्रत दिव शिव सुखकारी ॥ धन्य मुक्तजो पाले नरनारी॥टेर॥शील से सुख सम्पति

पावै ।। विघन भय दूर ही टल जावै ।। सुजश कीरति दह दिश छावै ।। देवपति पग वँदन आवै ।।दोहा।। जो शुध मनवच कायसे ।। पाले शील रसाल ।। सो कान्हड कठियारे के सम पावै मँगलमाल हालताको कहुँ विस्तारी ।। ध० ।।१।। अजुध्या नगरी मंझारो ।। नृपति कीरति धर सुखकारो ।। निधन पे मन मोहन गारो।।वसेतिहां कान्हड कठियारो ।।दोहा।। भव जीवों के भाग्यसे।। साधुतने परिवार।। गामन गर पुर विचरत आया चउ न्याणी अनगार धर्म उपदेश दियो भारी ।। ध० ।। २ ।। श्रवण सुनभविजन सुखपायो ।। भाग्य वश कान्हड तिहां आयो।।सुगुरु दर्शन कर हरषायो।।

नियम ल्यो मुनिवर फरमायो ॥ दोहा ॥ कान्हड कहै द्यो मोभनी ॥ शियल विरतनी आन ॥ पूणम के दिन पर नारि को मैं कीयो पचखान ॥ आज से साख सुगुरु थारी ॥ ध० ॥ ३ ॥ नियम ले वंदन कर भावैं॥धाम निज आयों चितचावैं॥ विपन से दारु भारलावै ॥ नगर में वेचै अरुलावै॥ ॥दोहा॥ इम अनुक्रम करतां थकां॥आयो वरषा काल॥ घोर घोर घन वरषन लाग्यो नदी वहैं असराल विहग वोले वोली प्यारी॥ ॥ ध० ॥ ४ ॥ कान्हरज्जू कुठार झाली ॥ ओढ सिरसे कामर काली ॥ चल्यो वन काटन तरु डाली ॥ धरणि पै हो रही हरियाली ॥ दोहा ॥ विषम नदी इक वाटमें॥

पेख विलख मुख कान ॥ बैठ्यो तटनी तट पर सोचे व्यर्थ भयो हैरान ॥ करम गति टरै नहीं टारी ॥ध०॥५॥ कान्ह फिर साहस दिल धरके ॥ लियो इक लक्कड जल तर के ॥ तास के खँड खँड करके ॥ बांधलई मोली मन भरके ॥ दोहा ॥ आयो नगर वजार में ॥ वेचन के हित कान ॥ तिन अवसर तिन नगर में सजी श्री पति सेठ सुजान वसै शुध वारै ब्रत धारी॥ध०॥६॥ सेठनो चँपक अनुचरजी॥गयो वाजार हरष धरजी ॥ मिल्यो कठियारो कान्हरजी॥मोल ले भार चल्यो घरजी॥दोहा॥ चोखो चँदन वासना ॥ महिके गंध महांन ॥ तदपि काठ के मोल कान्ह ने ॥ बेच्यो विन पहचान

सेठ लखि बोल्यो सुबिचारी॥ध०॥७॥कहो तुम चंपक परकासी ॥ मूल्य मो लीनों स्थूंथासी॥टका दोय दीजै सुखराशी ॥ दाम ले परौ घरें जासी ॥दोहा ॥ कान्हड कठि-यारा प्रतें ॥ सेठ कह्यो समुझाय ॥ दिया सुनैया भार प्रमाणें॥ कान्हड हरषितथाय॥ अमित तन छाई हुसियारी ॥ ध० ॥८॥ अंगमें फूल्यो नहिंमावै॥द्रव्य ले निज घर कोजावै ॥ एक वेश्यां लखि ललचावै ॥ द्रव्य से अनरथ ही थावै ॥ दोहा ॥ गणिका बैठी गोख में ॥ नट विट लंपट साथ॥ कान्हड लखि रसिया हंसि बोले यो आयो तुझनाथ करैगो क्यों हमसे प्यारी॥ध०॥९॥ श्रवण सुन वचन क्रोध खाके॥ वेग वेश्यां

के ढिंग जाके ॥ दियो सब धन अमरस पाके गये रसिया मुख बिलखाके ॥दोहा॥ देख द्रव्य गणिका उठी ॥ आई सन मुखधाय ॥ आगे आवो प्राणशरजी धन तुम तुमरी माय विहसि गल गल वैंय्यां डारी॥धं०॥१०॥ नायका नापित तेडायो॥क्षौर अरु उवटन करवायो ॥ सुगंधित जल से न्हवरायो ॥ कान्ह मन परमानंद पायो ॥ दोहा ॥ पट भूषण पहिरायकें ॥भोजन सरस जिमाय॥ देताम्बूल प्रेम अति पोख्यो हाव भाव दर साय ॥ चढी ले जाय चित्रसारी ॥ध०॥११॥ सहेली सबरी बुलवाई॥आप शृँगारित हो आई ॥ रागना नाटक कर गाई ॥ केल कौ सलता दिखलाई ॥दोहा॥ कामलता मन

मोहनी ॥ अद्भुत रूपारेल ॥ शची होय सर मितसत आगें कंचन की सी वेल कमल नयनी काम न गारी ॥ ध० ॥१२॥ कान्ह के वदन मदन छायो ॥ करण रति को स्यांसे चायो ॥ एतलें शशि धर दीख्यायो ॥ इंदु लखि नियम याद आयो ॥ दोहा ॥ पून मेरें दिन में कियो । परनारी परिहार॥अव सर आये कदियन लोपूँ ॥ सुगुरु वचनको कार त्याग तो ज्यां हो सी ख्वारी॥ध०१३। दिसा कोमिस वनांय सट क्यो ॥ घनों हीं वेश्या नें हट क्यो ॥ दियो वेश्यां को वेश पट क्यो ॥ मध्य वाजारें जा खट क्यो ॥ ॥ दोहा ॥ निज पट ओढी सोगयो ॥ सूँनीं देखी हाट ॥ विलख वदन को स्यां कान्हड

की ऊभी जो वे वाट हाथ लियें कंचन की
झारि ॥ध०॥१४॥ भयो परभात निशावीती॥
कान्ह आयो न जुडो प्रीती ॥ हती वेश्या
के यें रीती ॥ मुफत धन परको नां छींती
॥दोहा॥ नियम आपनो पालवा ॥ ले गणि
का सब लार ॥ कान्हड मू क्यों ते धन
जइने मेल्यो नृप दरवार ॥ विनय कर बात
कही सारी ॥ ध० ॥ १५ ॥ बात सुन नृप
विष्मय आंन्यों ॥ केम वह पुरुष जाय जा
न्यों ॥ करण निर्णय दिलमें ठांन्यों ॥ बुला
यो अनुचर मन मान्यों ॥ दोहा ॥ पुरमें पड
ह पिटावियो ॥ सुनलीजो सहुकोय ॥ काम
लताके घर धन तजके भाग गयो जे होंय॥
प्रगट सो होवे इनवारी ॥ध०॥१६॥ आय तब

कान्हड कठियारो कहै यो द्रव्य अछे म्हारो॥ अहो अनुचर मति किलकारो॥ वात मोरी यह अवधारो॥ दोहा॥ किंकर कर पकडी करी॥ लेगयो नरपति पास॥ कान्हड से नृपनें इम पूछी एतो धन तुझ पास केम आव्यो वादल फारी॥ध०॥१७॥ कहै तव कान्हड कर जोरी॥ विनय भूपति सुनियें मोरी॥ सिरी पति सेठ धरम धोरी॥ दियो तिन धन मोय भर झोरी॥ दोहा॥ ते धन वेश्यां कों दियो॥ में मन आंनी मान॥ पूरण शशि लखि मिस कर नाठ्यो पाल्यो में पचखान बुलायो श्रीपति व्यापारी॥ध०॥१८॥ नृपति से श्री पति इम भासे॥ नियम में लियो सुगुरु पासे॥ ठगूंना में पर धनता से॥ करू सब कारज

करुणा से ॥ दोहा ॥ चँदन भारो वेचवा॥
कान्हड आयो स्वाम ॥ चंदन सम कँचन
में दीधो ॥ राखन ब्रत अभिराम भई वेश्यां
भी इकरारी ॥ध० ॥१९॥ बात सुन सब धन
भू धवने॥दियो कान्हड को हरष घने॥प्रसंसा
कीनी सब जनने॥एत लें वन पालक पभने॥
॥दोहा॥ज्ञानी गुरू समो सरया॥चालो वँदन
राज ॥ प्रमुदित है राजा गयो सजी ॥ मुनि
वंदन के काज साथ ले सारी सरदारी ॥ध०॥
।२०।करें नृप परसन पग लागी॥कौन चारोंमें
सोभागी॥कहें मुनि चारों ही त्यागी॥अधिक
है कान्ह धरमरागी॥दोहा॥साधरमी लखि कान्ह
को॥दियो सचिव पदसार॥कान्हड राज ऋद्धि
सुखभोगी लीयो संजम भार भयो सुर एका भो

तारि ध०॥२१॥एम जानी बुध जन प्रानी॥ तजोधन दारा दुखदानी ॥शील ब्रत पालो मन आनी वृथा मत खोवो जिंदगानी॥दोहा॥ कान्हड मुनि गुण गावतां ॥ सुख सम्पति सरसाय ॥ सुगुरु मगन पद कज सुपसायें माधव मुनि गुण गाय कहै त्यागी की बलि हारी ॥ ध० ॥ २२ ॥ इति ॥

## ॥ अथ पद राग ठुमरी ॥

॥ परत्रिय पर संग सहै दुख जिन तिन का कहूँ नाम सुना करके॥टेर॥कुटम सहित दारुण दुखपायो॥रावण सिया हरला करके॥ लँक गमाय पँक परभामें पहुंच्यो प्राण गमा करके॥प०॥१॥ पूरण ताप सह्यो पद मोतर

द्रोपदि को हरवा करकें॥कीचक नीच भींच कर मारयो भीम भेष त्रियका करकें ।प०।२। हांसा और प्रहांसा के हित सुन्न मरयो तनता करकें ॥ मनरथ भूवो मयनरहा लखि अन रथ का फल पा करकें ।।प०।।३।। राज सुता के काज रुद्र द्विज मरयो रीछ वश जाकरकें॥ अवर अँनते जीव कुगति गए जग में कुजस बढा करकें ।।प० ।।४।। जो नर जितने पल पर त्रियको निरखे नेह निधा करकें ॥ ताकों तितने ही पल्यो पम तक मारें जमधाकरकों ॥ प०।।५।।पेख पराई रवारी परि हर परत्रिय को भय खाकरके।।सुगुरु मगन सुपसाय पाय मति माधव कहें समुझायकरकें।।प०।६।इति।

—*❋*—

## ॥ अथ लावनी वहिर खडी ॥

*** अँतरालपा ***

॥वुध जन पक्षपात तज पेखो व्यर्थ बनो मत मतवारे॥करो तत्व सर धान ज्ञान उर आन सुनों सज्जन प्यारे।टेर।कौंन कुगतिका कारण जग में जासे अवश कुगति जावै ॥ दुर्गति पड़ते प्राणी कों कहो कोन सुगति में पहुं-चावै॥को दातार हुवा इस जग में जसजश अज हूँ जग गावै॥कहो महा भारत में कौरव दल के हाथ कहा आवै॥डूवेंगे भव अरणव में को हिंसा धरम करण हारे॥क०॥१॥भीम भयानक विश्व विपनमें भय कोनसा कहाता हें॥कौंन हलाहल जग में जिसके खानेसे मर जाता है॥वतलावो बो रिपू कौंनसा जो नित

द्वंद मचाता है ॥ दारुण दुख क्याहै दुनियां में जिससे जग दुख पाता है ॥ ज्ञानी कौन कहावै जो छल क्रोध मान तृष्णा टारे।क०। ।२।एकांतिक आत्यंतिकहित को चेतन का कहिये सुविचार॥सरण कौन भाख्यो जिन् जीने इस अपार संसार मझार ॥ अनुपम सुख वो कहो कौनसा जासे सुखी कहै अन गार॥कहो विज्ञवर अमृत क्या है कोटि ग्रंथ का कर निरधार॥नीरागीका कहो अप्रमत सत वच तोष दया धारे।क०।३।जँगम तीरथ को हैं जगमें कहो सुज्ञ जन देके ध्यान॥उत्तम धर्म दलाल हुवाको कहो जिना गम के परिमान॥ जिन शाशन का मूल कहा है मिलै न जाके बिन निर्वाण॥ऋषभ आदिक चौवीसों जिनने

कियो कहापा केवल ज्ञान॥सुगुरु मगन सुष साय कहै मुनि माधव विनय भव्यतारे॥ ॥ क० ॥ ४ ॥ इति ॥

## ॥ अथ होरी ॥

॥ पालोशील विरत सुख कारी ॥ सुनों सौभागिन नारी । टेर॥ सजो शियल शृँगार सलोंनी ॥ विषय विकार विसारी ॥ जानो तन धन जोवन चँचल ॥ चल दल नें अनुहारी ॥ बेलगयो मनडो वारी ॥ पा० ॥ ॥ १ ॥ पंचन की साखा सें परणी ते पियुनो रहो प्यारी । तासे और पुरुष को जानो ॥ रँक फकीर भिखारी ॥ होय जो सुर अवतारी ॥ पा०॥ २ ॥ नट खट नर लँपट लुच्चा से ॥ दूर रहो हरवारी ॥

काम कुतूहल क्रीडा कारि ॥ बात कहो ना उघारि ॥ हँसो मत दे दे तारि ॥पा०॥ ॥ ३ ॥ बाट घाट चिक चउक चच्चर में॥ एक लडी निर धारि ॥ तात भ्रात सम तुल्य हु नर से॥करिये ना बात बिचारि॥ होय हक नाहक ख्वारि ॥ पा०॥४॥ विन कारण पर घर जाईने ॥ कीजै न थारी म्हारि ॥ पर धन सुत गृह पट भूषण लखि करियै ना ईर खारि ॥ गहो सँतोष पिटारि ॥ पा०॥ ५ ॥ पति परदेश गयां पद्म निको । तजवो सरस अहारि ॥ पट भूषण नूतन न पहरिवा॥ तीज त्योहार विनारि॥ न जावो बाग मझारि ॥ पा० ॥६॥ लाख बात की बात एक यह ॥ त्यागो चोरि

जारि ॥ सुध मन शील अराध्यां होस्यो॥ भव भव में सुखियारी ॥ कहै माधव सुवि चारी ॥ पा० ॥ ७ ॥ इति ॥

## अथ पद राग चलत सोरठा ।

॥ इह भव परभव में दुख दाई क्रोध न कीजिये हो राज ॥ टेर ॥ क्रोध समान न वैरीजी को ॥ तन में रहै दहै तनही को॥ बाधक सुरग पुरी को श्रवण सुनी जिये होराज ॥ इ० ॥ १॥ क्रोध समान न विष जग मांहीं ॥ जस पसाय सुध बुध रहै नांहीं ॥ संकट सहै सदांहीं गति छिन छी- जियेहो राज ॥ इ० ॥ २ ॥ क्रोध कियां नर कालो थावै ॥ निज पर को पीडा उप

जावै ॥ हाथ कछू ना आवै इम लखि
लीजिये होराज ॥ इ० ॥ ३ ॥ अल्प हु
क्रोध प्रचुर दुखदाई ॥ जिम तिण को
भारत भयो भाई ॥ क्रोधी कह्यो कसाई
कभुँ न पतीजिये होराज ॥ इ० ॥ ४ ॥
क्रोध रिदे में कुमति जगाडै ॥ प्रीत
पलक मांहीं विन साडै ॥ विधिकी बात
विगाडै प्रगट लखीजिये होराज ॥ इ० ॥
॥ ५ ॥ क्रोध कियां नारहै बडाई ॥
लज्जा लक्ष्मी जांय पलाई ॥ नाशे धीर
जताई किम से धीजिये होराज ॥ इ० ॥
॥ ६ ॥ देखो महा अचंच कारी ॥ क्रोध
कियां दुख पायो भारी ॥ पेख पराई
ख्वारी अवश डरीजिये होराज ॥ इ० ॥

॥ ७ ॥ क्रोध कियां दुख लहै न असको॥ वजै विश्व में ढोल कुजसको ॥ इम जानी शमरस को प्यालो पीजेये होराज ॥इ०॥
॥ ८ ॥ श्रीयुत सुगुरु मगन मुनि ध्याई माधव कहै सुनों चितलाई ॥ सब जगको सुखदाई बात कहीजिये होराज ॥ इ० ॥
॥ ९ ॥ इति ॥

## ॥ पद राग सोरठ ॥

॥ मान न कीजै हो चतुर सुजान ॥टेर॥
मान विनय सुरतरु काटन को॥कातिल जान कृपाण ॥ सुजश शशी को कला निरोधन॥ परतख राहु समान ॥मा० ॥१॥ मान किये अपमान लहै नर ॥ आवैना गुण ज्ञान॥उप

श्रम रूपी थंभ उपाडन ॥ मान गजेंद्र पिछान ॥मा०॥२॥ मान महातमको विनशाडै॥मान घटावैकान॥वुध विद्या नैपुनता नाशन।मानों मदिरा पान॥मा०॥३॥ मान कियां दशमुख दुख पायो॥कर कुल को अवशान॥दुर्योधन कोणिक आदिकणें दुरगति कीन पयान ॥ ॥मा०॥४॥इम जानी मार्दवता करके ॥ जीतो मान महान॥सुगुरु मगन सुपसाय पाय मति॥माधव करत वखान॥ मा०॥५॥इति॥

## ॥ पुनःपद ॥

॥पदम प्रभू पावन नाम तिहारो ए देशी लोभ सम को जगमें दुख दाई॥ जासों जावै सुजश वडाई॥टेर॥ पाप को बाप मोह विष

वृक्ष को मूल कह्यो मुनिराई ।। पुण्य पयो दधि शोषण कारण कुंभोद्भवकी नाई।।लो०।। ।।१।।प्रगट प्रभाकर रोधन नीरदसमये थाई।। ग्रसन विवेक शशी को राहू देखो दृष्टि लगाई ।। लो०।।२।।कूड़ को कोष कलेश को कारण दंभ की दीर्घन टांई।।लाज लता उत पाटन गज सम क्यों न तजोरे भाई ।। लो०।।३।। सूक्षम लोभहू है दुख दायक होय उदै जब आई ।। एका दश में जीव ठाण से देवै प्रथम पठाई ।। लो० ।। ४ ।। जिम जिम लोभ होय तिम तिमही लोभ बढ़तो जाई।। दो मासे के काज कपिल गयो कोटि से तृपति न पाई ।। लो० ।। ५ ।। लोभी विषम विदेश में जावै गिनेना गिरि बन

खाई ॥ कृत्य कुकृत्य न देखै कोई ॥ करे कुकर्म अघाई ॥ लो० ॥ ६ ॥ अति को लोभ न कीजे प्राणी खारी पेख पराई ॥ लोभ पसाय लखो सागर गयो सागर मांहिं समाई ॥ लो० ॥ ७ ॥ पूरव पुण्य विना श्रम कीयें पावै न एकहु पाई ॥ इम जानी मन थिर चित आनो पुण्य करो उतसाई ॥ लो० ॥ ८ ॥ सुगुरु मगन मुनि पद कंज पर सत जावे पाप पलाई॥ निर्लोभी मुनि को मुनि माधव वंदे शीस नवाई ॥ लो० ॥ ९ ॥ इति ॥

१ अगस्त २ मेघ ३ खजानो ४ कपट ५ स्तँभ

## ॥ लावनी ॥

॥ समझ मन माया दुख दाता ॥ माया के परसंग पलक में टूट जाय नाता ॥ ॥ टेर ॥ कुगति युवति गल माल मोह गज साल लखो भ्राता ॥ सत्य सूर्य्य के अस्त करण को सँध्या समख्याता ॥स०॥ ॥ १ ॥ कूड केल घर कुमति कोठरी धरम हरम दाता ॥ कसिन व्यसन उपजन की धरणी बरणी है ज्ञाता ॥ स० ॥ २ ॥ भय विभ्रम की खान करै पुम्बेद तनी घाता ॥ निवड कपट करणे से प्राणी पशु शरीर पाता ॥ स० ॥ ३ ॥ अविश्वास को थानक ही दुरध्यान जनन माता रे मन मूरख शोच कपट कर को पायो

साता ॥ स० ॥ ४ ॥ निपट कपट कर झपट पराया धन जो ठग खात्ता ॥सो०॥ सो नर दिव शिव सुख से वंचित हो दुर-गति जाता ॥ स० ॥ ५ ॥ कपटी जन का कुजश केतु[2] जग मांहीं फर्रात्ता ॥ इम जानी तज दीजे माया जो तू सुख चाता ॥ स० ॥ ६ ॥ सुख साथी संसार विपत में को आडा आता ॥ क्यों नाहक कर कपट मूढ मन मांहीं हर काता ॥ स० ॥ ७ ॥ चरण करण युत सुगुरु मगन मुनि सब जग जन ज्ञाता॥धाम मँडावर मांझ मुनी माधव इम समझाता ॥ सम० ॥ ८ ॥

॥ इति ॥

१ महल २ ध्वजा

# * खुशखबर *

सर्व जैनी भाइयों को विदित होकि जो किताबें नीमचके छापे खानेमें छपीथो वह इससमयइससभामें बिक्रीयार्थउपस्थितजिन साहबोंकोचाहिये वह फौरन पत्रद्वारा प्रकट करें और इस सभामें हमेशा जैनियों के नये नये ग्रँथ छपते रहते हैं. और जिस जैनी भाईको कोई चीज छपवानी हो सभाउनको बहूत सस्ता छपाकर भेजेगी ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| जैनदर्पण | १) | रतनपाल सेठरो चरित्र | ॥) |
| अंजना सतीकारास | ॥) | मेणरहिया सतीनोरास | ≈) |
| हंसराजवत्सराजकारास | ≈) | पूजावली | ।) |
| देवसिगइ प्रतिक्रमण | ।) | स्तवन संग्रह | ≡) |
| जैनरत्नावली | ≈) | मानगराजा | ॥) |

पता: पुस्तक मिलनेका. साधुमार्गी जैनउद्योतनी सभा

ठिकाना: सेठ जसवंतराय आगरा